

Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 15 अप्रैल, 2023

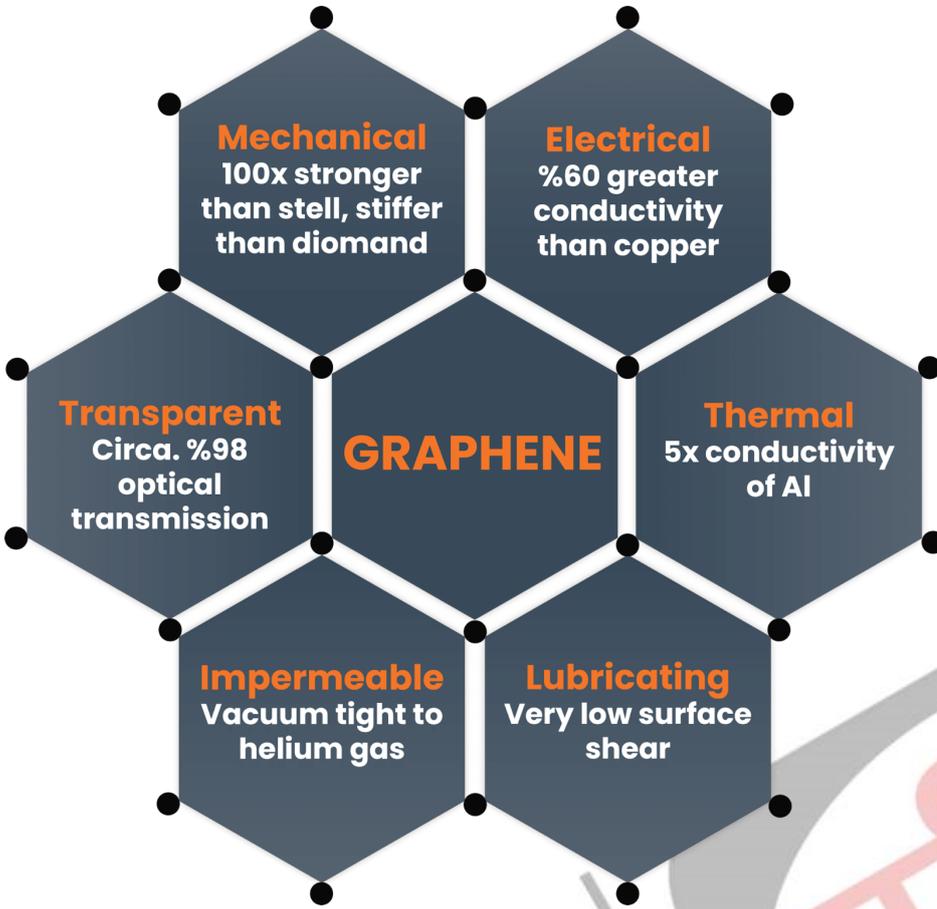
कंबम अंगूर को GI टैग



हाल ही में तमलिनाडु के प्रसिद्ध कंबम पन्नीर थराचाई, जिसे कंबम अंगूर के रूप में भी जाना जाता है, को भौगोलिक संकेतक (Geographical Indication- GI) टैग प्रदान किया गया है। तमलिनाडु में पश्चिमी घाट पर स्थित कुंबुम घाटी को 'दक्षिण भारत के अंगूरों के शहर' के रूप में जाना जाता है जहाँ पन्नीर थराचाई की खेती की जाती है। यह कस्मि, जिसे **मस्कट हैमबर्ग के रूप में भी जाना जाता है**, अपनी त्वरति वृद्धि एवं जलदी परपिकवता हेतु लोकप्रिय है, साथ ही यह फसल लगभग पूरे वर्ष बाज़ार में उपलब्ध रहती है। पन्नीर अंगूर पहली बार 1832 में एक फ्राँसीसी पुजारी द्वारा तमलिनाडु में लाए गए थे, ये **विटामिनि, टार्टरिक एसिड एवं एंटीऑक्सिडेंट** से भरपूर होते हैं, साथ ही कुछ पुरानी बीमारियों के जोखिम को कम करते हैं। ये बैंगनी भूरे रंग के अलावा बेहतर स्वाद हेतु भी जाने जाते हैं। GI उन उत्पादों हेतु इस्तेमाल किया जाने वाला एक संकेत है जिनकी एक **वशिष्ट भौगोलिक उत्पत्ति** होती है एवं उन गुणों या वशिष्टता से युक्त होते हैं जो उस भौगोलिक मूल के कारण होती है। वस्तुओं का **भौगोलिक संकेत (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999** भारत में वस्तुओं से संबंधित भौगोलिक संकेतों के पंजीकरण एवं बेहतर सुरक्षा प्रदान करने का प्रयास करता है। यह **TRIPS/ट्रिप्स पर WTO** समझौते द्वारा शासित तथा नरिदेशित है।

और पढ़ें... [भौगोलिक संकेतक टैग](#)

गुणवत्ता नियंत्रण आदेश



वस्त्र मंत्रालय ने तकनीकी नयिमों की अधिसूचना की उचित प्रक्रिया पूरी करने के बाद पहले चरण में 19 भू-वस्त्र उत्पाद और 12 सुरक्षात्मक वस्त्र उत्पाद वाली 31 वस्तुओं के लिये 02 गुणवत्ता नियंत्रण आदेश (Quality Control Orders- QCO) प्रारंभ करने की घोषणा की। ये गुणवत्ता नियंत्रण आदेश तकनीकी वस्त्र उद्योग के लिये भारत की तरफ से जारी किये गये पहले तकनीकी नयिमन हैं। भू-वस्त्र उत्पाद का उपयोग बुनयिदी ढाँचा परियोजनाओं एवं पर्यावरणीय अनुप्रयोगों के लिये किया जाता है, जबकि सुरक्षात्मक वस्त्रों का इस्तेमाल मानव जीवन को खतरनाक तथा प्रतिकूल कार्य स्थितियों से सुरक्षित रखने हेतु होता है। जारी किये गए गुणवत्ता नियंत्रण आदेश उपयोगकर्ताओं एवं लक्षित उपभोक्ताओं को सर्वोत्तम सुरक्षा अधिमिन उपलब्ध कराने का प्रयास करेंगे। इस कदम से भारतीय उत्पादों की गुणवत्ता को बढ़ावा मल्लिगा, जो वैश्विक मानकों के समतुल्य होगी। ये दो भू-वस्त्र उत्पाद और सुरक्षात्मक वस्त्र उत्पाद गुणवत्ता नियंत्रण आदेश आधिकारिक राजपत्र में इसके प्रकाशन की तारीख से 180 दिनों के तुरंत बाद लागू होंगे। इन गुणवत्ता नियंत्रण आदेशों में नरिदष्टि अनुरूपता मूल्यांकन आवश्यकताएँ घरेलू उत्पादकों के साथ-साथ उन वदिशी नरिमाताओं पर भी समान रूप से लागू होती हैं, जो भारत में अपने सामान का नरियात करना चाहते हैं।

और पढ़ें... [राष्ट्रीय तकनीकी वस्त्र मशिन \(NTTM\)](#), [भारत का वस्त्रोद्योग क्षेत्र](#)

ग्राफीन और मैग्नेटोरेसिस्टेंस

ब्रिटेन के शोधकर्ताओं ने ग्राफीन के एक और गुण की खोज की है। यह कमरे के तापमान पर एक असामान्य विशाल चुंबकत्व (Giant Magnetoresistance- GMR) प्रदर्शित करता है। GMR परघटना तब देखी जाती है जब आसन्न चुंबकीय क्षेत्र वदियुत प्रतरोध की सुचालकता को प्रभावित करता है। इसका उपयोग कंप्यूटर, बायोसेंसर, ऑटोमोटिवि सेंसर, माइक्रोइलेक्ट्रोमैकेनिकल सिस्टम और मेडिकल इमेजरस में हार्ड डिसक ड्राइव तथा मैग्नेटोरेसिस्टिवि रैम में किया जाता है। GMR-आधारित उपकरणमूल रूप से चुंबकीय क्षेत्र संवेदन के लिये उपयोग किये जाते हैं। नए अध्ययन में पाया गया है कि ग्राफीन आधारित उपकरणों को अपने पारंपरिक फेरोमैग्नेटिक समकक्षों के विपरीत इन क्षेत्रों के संवेदन के लिये न्यूनतम तापमान की आवश्यकता नहीं होती है। ग्राफीन षट्कोणीय जाली में व्यवस्थित कार्बन परमाणुओं की एक मोटी परत है। यह ग्रेफाइट का मूलभूत घटक है। यह लचीली, पारदर्शी और अवशिवसनीय रूप से मज़बूत होने के साथ-साथ विश्व का सबसे पतला, अधिक तापीय और वदियुत प्रवाहकीय पदार्थ है। ग्राफीन को ऊर्जा एवं चकितिसा जगत में इसकी अपार संभावनाओं के कारण एक अद्भुत पदार्थ के रूप में भी जाना जाता है

और पढ़ें... [भारत का पहला ग्राफीन नवाचार केंद्र](#)

अमटि स्याही



कर्नाटक में वधानसभा चुनाव के दौरान मैसूर में मैसूरु पेंट्स एंड वार्नशि लमिटेड फरि से चर्चा में है क्योंकि यह एकमात्र कंपनी है जसि भारत में लोकसभा चुनावों में इस्तेमाल होने वाली अमटि स्याही बनाने की अनुमति है। मैसूर नलवाड़ी कृष्णराज वोडेयार के महाराजा ने वर्ष 1937 में लोगों को रोजगार प्रदान करने और आसपास के वनों से प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग हेतु कारखाने की स्थापना की। वर्ष 1962 में इसे अमटि स्याही बनाने हेतु चुना गया, जसिका पहली बार देश के तीसरे लोकसभा चुनाव में इस्तेमाल किया गया। तब से अब तक कंपनी ने पूरे भारत में प्रत्येक चुनाव हेतु स्याही की आपूर्तिकी है। इसने अन्य देशों को स्याही का निर्यात भी किया है। इस इकाई को वर्ष 1947 में कर्नाटक की महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों में से एक पब्लिक लिमिटेड कंपनी में परिवर्तित कर दिया गया था। अमटि स्याही जसि 'मतदाता स्याही' के रूप में भी जाना जाता है, यह सुनिश्चित करती है कि कोई भी पात्र मतदाता चुनाव में दो बार मतदान न करे, अतः यह धोखाधड़ी तथा एकाधिक मतदान से बचने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

और पढ़ें...[संवत्तर और नषिपकष चुनाव](#)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/rapid-fire-current-affairs-15-april-2023>

